

॥ निरबाणमन्जरी ॥

अहं नामरो नैर मरेत्या न दैतो

न गन्करबयन्कः पिशाचप्रभेदः .

पुमान्नेर न स्त्री तथा नैर षण्डः

प्रकृष्टः प्रकाशस्वरूपः शिबोहम् .. १..

अहं नैर बालो युवा नैर ब्रुद्धे

न बरणी न च ब्रह्मचारी गृहस्थः .

बनस्थेथापि नाहं न संन्यासुधरमा

जगज्जन्मनाशैकहेतुः शिबोहम् .. २..

अहं नैर मेयस्तिरोभूतमाया

तथैरेष्किंतुः मां पृथङ्नास्त्युपायः .

समान्निष्ठकायत्रयोप्यदिबतीयः

सदातीन्द्रियः सरवरूपः शिबोहम् .. ३..

अहं नैर मन्त्रा न गन्त्रा न बन्त्रा

न करता न भोक्ता न मुक्ताश्रमस्थः .

यथाहं मनोबृत्तिभेदस्वरूप-

स्तथा सरबृत्तिप्रदीपः शिबोहम् .. ४..

न मे लोकयात्राप्रबाहप्रबृत्ति-

रन मे बन्कबुद्ध्या दुरीहानिबृत्तिः .

प्रबृत्तिरिनबृत्त्यास्य चित्तस्य बृत्ति-

र्यतस्तन्बहं तत्स्वरूपः शिबोहम् .. ५..

निदानं यदङ्गणकार्यस्य कार्यं

बिना यस्य सत्तबं स्बतो नैर भाति .

यदादन्तुमध्यान्तरालान्तराल-

प्रकाशात्कं स्यात्तदेबाहमस्मि .. ६..

यतोहं न बुद्धिरन मे कार्यसिद्धि-

ৰ্যাতো নাহমঙ্গং ন মে লিঙ্গভঙ্গম্ .
 হৃদাকাশৰৱতী গতান্ধৱযাৱিতঃ
 সদা সচ্চিদানন্দমূৱিতঃ শিৰোহম্ .. ৭..
 যদাসীদিৰলাসাদিৰকাৱং জগদ্য-
 দিৰকাৱশ্ৰযং নাদিৰতীযত্ৰতঃ স্যাৎ .
 মনোবুদ্দিচিহ্নাহমাৰাৱত্তি-
 প্ৰৱত্তিৱ্যতঃ স্যাত্তদেৰাহমস্মি .. ৮..
 যদন্তুৱবহিৰৰযাপকং নিত্যশুদ্ধং
 যদেকং সদা সচ্চিদানন্দকন্দম্ .
 যতঃ স্খুলসূক্ষ্মপ্ৰপঞ্চস্য ভানং
 যতস্তত্ত্ৰসুতিস্তদেৰাহমস্মি .. ৯..
 যদৱেকন্দুৰিদুত্ত্ৰভাজালমালা-
 ৰিলাসাস্পদং যত্ৰস্ৰভেদাদিশূন্যম্ .
 সমস্তং জগদ্যস্য পাদাত্মকং স্যা-
 দ্যতঃ শক্তিভানং তদেৰাহমস্মি .. ১০..
 যতঃ কালম্ভূৱিৰভেতি প্ৰকামং
 যতশ্চিত্তবুদ্ধীন্দ্ৰিয়াণাং ৰিলাসঃ .
 হৰিৱ্ৰহমৰুদ্ৰেণ্দ্ৰচন্দ্ৰাদিনাম-
 প্ৰকাশো যতঃ স্যাত্তদেৰাহমস্মি .. ১১..
 যদাকাশৰত্ৰসৱৰগং শান্তৰূপং
 পৰং জ্যোতিৰাকাৱশূন্যং ৰৱেণ্যম্ .
 যদাদ্যন্তশূন্যং পৰং শঙ্কৰাখ্যং
 যদন্তুৱিৰভাৰযং তদেৰাহমস্মি .. ১২..
 ইতি শ্ৰীমত্ৰপৰমহংসপৰিৱৰাজকাচাৱ্যস্য
 শ্ৰীগোৱিন্দভগৱত্পূজ্যপাদশিষ্যস্য
 শ্ৰীমচ্ছঙ্কৰভগৱত্পাদ কৃতৌ

नररुणगडुरी संडूरुणु ..

Encoded by Sunder Hattangadi (sunderh@hotmail.com)

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com